डा सुजाता गुप्ता
हिंदी विभाग

लौट आ, ओ धार

कविता का सामाजिक संघर्ष से काटकर नहीं देखा जा सकता। शमशेर बहादुर सिंह की कविताओं में सरल एवं सपाट तरीके से समाज के संघर्ष को नहीं समझा जा सकता, बल्कि उनकी रचनाओं में भाषा की बहुस्तरीयता को पारकर ही यह संभव हो पाता है। संकलन की रचना 'लौट आ ओ धार' में भी सघन जीवनबोध की अभिव्यक्ति हुई है। कवि समय की बहती धारा में स्वयं को किनारे पर खड़ा पाता है। गति के विरुद्ध की स्थिति का विरोध ही कविता का मुख्य प्रतिपाद्य है।

शमशेर की कविता की बुनावट की यह विशेषता है कि जिस उच्चभूमि पर स्थित होकर वह काव्य की रचना करते हैं, उसमें स्वत: पाठक को काव्य बोध के लिए मानसिक उच्चता रखनी पड़ती है। कविता बहुआयामी होती है, जिसे भिन्न-भिन्न मानसिक स्तरों पर भिन्न-भिन्न तरीके से चित्रित किया जा सकता है। कालक्रमानुसार, कविता मोहभंग की ~~स्थिति का~~ भावदशा दर्शाती है। यह काल आजादी के बाद ~~उपजी परिस्थितियों एवं आम~~जनता के बीच उपजी विषम परिस्थितियों एवं सारी आकांक्षाओं के घालमेल का था। आजादी के पूर्व देश ~~की स्थिति~~ एक समान लक्ष्य की ओर झुकी था। सारे बंदे एक ही धुन में मस्त थे। सारे कार्यों का एक ही प्रयोजन था — देश की आजादी। सभी एक ही धारा में समान गति से बहते दिखाई पड़ते थे। लेकिन जल्दी ही धारा के बहाव में गति आयी और सामान्य जन उस बहाव से किनारे कर दिए गए, जिनमें कवि भी था।

यह धार समाज का वह सुविधाजीवी संपन्न वर्ग था, जिसके कुशल एवं समर्थ हाथों में समाज का नेतृत्व था। अन्य सामान्य लोग, जिनमें कवि भी था (ये सब कभी धार में थे), अब किनारे कर दिये गये हैं। यह धार जीवनबोध की अबाध गति है, लेकिन इसमें गति का हक केवल समर्थ लोगों

Teacher's Signature

PAGE NO.
DATE: / /

की है। कवि की यह पीड़ा केवल उसकी सहजात नहीं है, बल्कि बहुसंख्यक लोगों की संवेदना ~~वेदना~~ के रूप में है। कवि, उस धार को, लौटने को कह रहा है। वह धार लौटे या न लौटे, लेकिन लोगों का हाहाकार, चित्कार कवि के साथ बना रहता है। उनको इस बात की संभावना रहती है कि कभी तो वह धार लौट में मिल सके।

शमशेर की कविताओं की खासियत है — उनकी बहुआयामी चित्रशाला। ~~कविता में चित्रों को बहुत सावधानी से टाँका गया है।~~ एक कविता में विषय तो एक है, पर वस्तुओं में सार्थक विविधता है। यानि अर्थ को व्यंजित करते विभिन्न चित्रों से पटी है उनकी कविता।

अगला दृश्य दुःख के बोझिल वातावरण का है। जहाँ साँझ की तन्हाई, उसका 'साँवलापन' (शमशेर का प्रिय रंग) पत्थर की भंगिमा सा टूट रहा है। हम सुबह से अपने दैनंदिन कार्यों में रमे रहते हैं, जिससे अपने दर्द को भूले रहते हैं। लेकिन जैसे ही शाम घिर आती है, हम पुनः अपनी चेतना में सिकुड़ने लगते हैं। दिन के कर्म-कोलाहल में अपने दर्द की ओर जहाँ ध्यान तक नहीं जाता, वहीं ~~साँझ क~~ शाम की वास्तविकता काई की तरह हम पर छाने लगती है। दुःख से लिप्त इस जीवन में साँझ पत्थर की तरह ठहरती है। शाम में दिल की धड़कनों का आभास पाँवों की आहट-सी लगती है। यहाँ कवि संकोच के साथ अपनी आह को मुख्य कलेवर से अलग रखता है। उत्तरोत्तर साँवली होती चली जा रही साँझ काले-पत्थर में बदल जाती है। समय भी हममें समाकर ~~अंतिम बंध में कवि की~~ हमारे ही भीतर से गुजर रहा है, ~~के~~ वही कराह ~~की तरह~~ रहा है। अधिसंख्य जन की वेदना कवि में समाहित है। 'आह' का तात्पर्य बिल्कुल ही टूटी हुई परिस्थिति से है, जिसमें वह भीतर से पराजित हो चुका होता है।

जारी है.....

Teacher's Signature